मिट्टी का चेहरा

राजेश जोशी



संभावना प्रकाशन
रेवती कुंज हापुड़-२४५१०१

मूल्य : 25.00 रुपये

मिट्टी का चेहरा (कविता संग्रह) / © राजेश जोशी / आवरण : मूर्ति-शिल्प—डॉ० कमल शर्मा, छायाकारी—सुरेन्द्र राजन/प्रकाशक : संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़-245101 / मुद्रक : हरीकृष्ण प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032 / प्रथम संस्करण : 1985

MITTI KA CHEHRA (POEMS) BY RAJESH JOSHI

First Edition : 1985 Price : 25.00

बाई और पिताजी के लिए

क्रम

मै उड़ जाऊँगा

सबको चकमा देकर एक रात
मैं किसी स्वप्न की पीठ पर बैठ कर उड जाऊँगा ।
हैरत में डाल दूंगा सारी दुनिया को
सब पूछते बैठेंगे
कैसे उड़ गया ?
क्यो उड़ गया ?

तंग आ गया हूँ मैं हर पल नष्ट हो जाने की
आशंका से भरी इस दुनिया से
और भी ढेर तमाम जगह हैं इस ब्रह्माड में
मैं किसी भी दूसरे गृह पर जाकर बस जाऊँगा

मैं तो कभी का उड गया होता
चाय की गुमटियो और ढाबो में गरम होते तंदूर पर
सिकती रोटियो के लालच में मैं हिलगा रहा इतने दिन
ट्रक ड्राइवरों से बतियाते हुए
मैदान मे पडी खटियों पर
गुजार दी मैंने इतनी रातें

क्या यह सुनने को बैठा रहूँ धरती पर
कि पालक मत खाओ ! मेंथी मत खाओ !
मत खाओ हरी सब्जियाँ !

मैं सारे स्वप्नो को गूँथ-गूँथकर
एक खूब लम्बी नसैनी बनाऊँगा
और सारे भले लोगो को ऊपर चढ़ा कर
हटा लूँगा नसैनी
ऊपर किसी गृह पर बैठ कर
ठेंगा दिखाऊँगा मैं सारे दुष्टों को

कर डालो कर डालो जैसे करता हो नष्ट
इस दुनिया को

मैं वहीं उगाऊँगा हरी सब्जियाँ और
तंदूर लगाऊँगा।

देखना एक रात
मैं सचमुच उड़ जाऊँगा।

रंगरेजों का कमाल

मनचाहा रंग नही चढ़ेगा कपड़े पर
परेशान हो जायेंगे रंगरेज और
सारा शहर अफवाहों से भर जाएगा !

उड़ गया, कोई लड़का उड़ गया रात
रंग के हुंडे मे बैठ कर
हर गाली बकने वाले राहगीर पर
हवा से आता है पत्थर
घरो मे रात गए औरतें चीखती हैं।

अचानक बदल जाएगा सारा दृश्य
चाबी के खिलौनो से चंचल हो जायेंगे दिन
पानी की लगी होली और पानी के सपने आयेंगे
खाली घड़े बजा-बजा कर लोग कहेंगे
अजब लड़का था
हुंडे मे बैठ कर उड़ गया !

बजट पर चलेगी बहस और मँहगी हो जायेगी यात्रा
सावधान ! कवियो सावधान
और करलो विस्तृत अपने अनुभव का संसार !
देखो उस लड़के को देखो
जो हुंडे में बैठ कर उड़ गया !

दिनभर की कमाई खर्च करके लौटेगा सूरज
आसमान के चिथड़े से सिला झोला उठाए
भार हर दिन और हल्का हो जाएगा
मर्द चिड़चिड़ायेंगे औरतें कलपेंगी
मन ही मन हँसेंगे रंगरेज।
चौराहों पर मुँह उठाए झुंड बनाए

लोग आसमान में ढूंढेंगे

कौन लड़का उड़ गया
रंग के हंडे मे बैठ कर !

झूठ के बारे में एक कविता

झूठ एक बाजे की तरह था
जरा सी फूंक मारो तो बहुत जोर से बजता था

वह बहुत चुस्त और फुर्तीला था
आसानी से पकड़ मे नही आता था
वह कमाल का दिखनौटा था दिलचस्प और मजेदार भी
टमाटर की तरह लाल थे उसके गाल
वह कभी बूढा नहीं लगता था

बनिस्बत सच के ज्यादा विश्वसनीय लगता था
और आमतौर पर ज्यादा काम आता था लोगों के
वह विनम्र था और आटे में नमक की तरह
रहना चाहता था

शासक जबकि उपयोग करना चाहते थे उसका
उल्टे अनुपात मे और तानाशाह सोचते थे
कि उसे बार-बार दोहराने से
वह सच की तरह लग सकता है
यह बात एकदम गलत थी

वह गुलाम की तरह दबोचे रहता था सच को
हालांकि सच की जो भी प्रतिष्ठा थी
उसी के कारण थी

उसमें अच्छी बात यह थी कि
अपने को छुपाता नही था
अपनी सारी चालाकी के बाद भी देर सबेर
पहचान मे आ जाता था

यही बात उसमें सच से अलहदा थी।

मिट्टी का

भयानक विचार

चाँद की ओर पीठ किए
शहर की छत पर बैठा है गिद्ध

अब इस दुनिया की खैर नहीं
एक-एक कर अब घरों से आयेगी रोने की आवाज़
फिर शुरू होगा कउओं का सामूहिक कर्कश शोर
फिर सब एक-दूसरे में डूब जायेगा

टूट रही हैं धरती की बूढ़ी पसलियाँ
फटा जा रहा है आसमान का माथा

उड़ाओ गिद्ध को उड़ाओ
बचाओ हो सके तो बचाओ,
इस दुनिया को !

समय की सल्वाट खोपड़ी में पल रहा है
एक भयानक विचार !

झींगुर

कभी भी खत्म हो सकती है यह दुनिया
खत्म हो सकता है किसी भी पल
सारा जीवन !

खत्म हो जायेगा जब सारा जीवन
तब भी बचे रहेंगे झींगुर
उन पर कोई असर नहीं होगा किसी बम का

खत्म हो जायेगा जब सारा जीवन
तो खत्म हो जायेगा सारा शोर
खत्म हो जायेंगी सारी तकलीफें सारे दुख
दुनिया में होगा सिर्फ भयानक सन्नाटा
सन्नाटे में बोलेंगे झींगुर
तो कितना डरावना लगेगा सारा दृश्य !

पर कोई नहीं डरेगा तब
तब किसी चीज का डर नहीं बचेगा
बचेंगे सिर्फ झींगुर
जो अगली दुनिया बसने तक
तोड़ते रहेंगे सन्नाटा दिन रात ।

सचमुच की रात

सूरज ने स्वप्न देखा कि वह चाँद है
चाँद ने स्वप्न देखा कि वह
करोड़ तारे हैं

रोटी हिरन होने के स्वप्न में डूबी
जंगल में कुलाँचे भर रही थी
मैं एक कंदरा से निकला
अपना तीर कमान लेकर

तभी किसी पेड़ के पीछे से दबे पाँव
आया एक चीता
और उसने दबोच लिया हिरन को !

इसके बाद एक सचमुच की रात हुई
और किसी के पास
तब कोई स्वप्न नहीं बचा ।

आखेट

नीद को बेचकर सारे घोड़े
कुलांचे भरने को छोड़ दिए हिरन
स्वप्नलोक में

'शिकारियों के लिए प्रवेश निषेध'
'शिकार खेलना मना है यहाँ'
जगह-जगह लगायी
मैंने तख्तियाँ

पर पैरो मे इकट्ठा दिन भर की थकान
और दिनभर रोती हुई रुलाई
सबने मिलकर पैदा किया
मेरे ही रक्त से
एक शिकारी

मेरे स्वप्नलोक की चाँदनी रात मे
खेला उसने आखेट
रातभर रातभर
देखी मैंने
हिरनो की चीत्कार

हाँ देखो
यह हिरनो की चीत्कार !!

मिट्टी का चेहरा

एक पारदर्शी बाज झपटता है
और एक छोटे मेमने की तरह
दम छोड़ भागता है
चाँद

कलादीर्घा में लगी
के० जी० सुब्रमण्यम की प्रदर्शनी में
लोग खड़े हैं
चमकदार दीवार पर टँगे
एक मिट्टी के चेहरे के सामने

एक मिट्टी का चेहरा !

जगह-जगह से तड़क गयी है इसकी मिट्टी
चेहरे पर पड़ती तेज रोशनी भी
खदेड़ नहीं पाती
दरारों में घुसा अँधेरा

एक मिट्टी का चेहरा !

कपाल पर पड़ी त्योरियाँ
मुँह से बाहर झाँकते
बड़े-बड़े मिट्टी के दाँत
बड़ी-बड़ी जेबों वाले मिट्टी के कोट पर
लटक रहे हैं मिट्टी के तमगे

यह मिट्टी का चेहरा
हमारे वक्त पर
जैसे कोई तात्कालिक प्रतिक्रिया !

वह मिट्टी का चेहरा !

शताब्दियो पहले दफनाया जा चुका
कोई तानाशाह
अपनी टाँगें और जूते कब्र मे भूलकर
हडबड़ी में जैसे आ गया हो
आधा बाहर !!

एक बार फिर

पत्नी बैठी होगी थाली परोस कर
और कौर तोड़ने से
पहले
गिर पड़ेगा
न्यूट्रान बम !

जीवन की हलचल के बिना
गुजर जायेंगी
कई शताब्दियाँ
कई शताब्दियाँ गुजर जायेंगी
जीवन की हलचल के बिना

कोई आयेगा तब
कई शताब्दियों बाद !

तब भी ज्यों की त्यों धरी होगी
शताब्दियों पहले
परोसी गई थाली
शताब्दियों बाद भी
गर्म रहेंगी रोटियाँ
जिन्हें ऑफिस से थक कर लौटने के बावजूद
बनाया था पत्नी ने

सारे हत्यारों की इच्छा के बावजूद
नहीं लग पायेगी फफूँद
शताब्दियों पहले
बड़ी मेहनत से जुटाए गए
अनाज पर

शताब्दियों बाद भी
चटनी से आ रही होगी
कैरी और ताजे पुदीने की गंध
बेचैन कर देगी जो
आदमी की भूख को

एक बार फिर
एक बार फिर

एक बार फिर

पत्नी बैठी होगी थाली परोस कर
और कौर तोड़ने से
पहले
गिर पड़ेगा
न्यूट्रान बम !

जीवन की हलचल के बिना
गुजर जायेंगी
कई शताब्दियाँ
कई शताब्दियाँ गुजर जायेंगी
जीवन की हलचल के बिना

कोई आयेगा तब
कई शताब्दियों बाद !

तब भी ज्यों की त्यों धरी होगी
शताब्दियो पहले
परोसी गई थाली
शताब्दियो बाद भी
गर्म रहेंगी रोटियाँ
जिन्हें ऑफिस से थक कर लौटने के बावजूद
बनाया था पत्नी ने

सारे हत्यारो की इच्छा के बावजूद
नही लग पायेगी फफूंद
शताब्दियो पहले
बड़ी मेहनत से जुटाए गए
अनाज पर

शताब्दियों बाद भी
चटनी से आ रही होगी
कैरी और ताजे पुदीने की गंध
बेचैन कर देगी जो
आदमी की भूख को

एक बार फिर
एक बार फिर

नींद

हवा के हज़ार घोड़े
हज़ार घोड़ों पर आई रात

बहुत सारा माल असबाब
करोड़ों लोगों की नींद
बच्चों बड़ों-बूढ़ों
और जवान प्रेमी-प्रेमिकाओं के सपने
लादे हुए

जरा सी
अनजाने ही हो जाए
भूल-चूक
कैसा बवेला मचे
लोगों की नींद में !

एक नन्ही सी अकेली जान
बिचारी पर
कितनी ढेर जिम्मेदारियाँ !

सुख

उपटे खुरचे लीपी छाबी
भीत पोत कर
माडी साभी

सब बैठे फिर गोल बांध कर
सबने मिलजुल
गाया गाना

बीच दुखों मे दुनिया भर के
अपना छोटा-सा
सुख
पहचाना ।

उसके स्वप्न में जाने का यात्रा वृत्तान्त

मैं उसके स्वप्न में जाना चाहता था

वह हरी-हरी कमीज मैंने पहन ली
जो उसे खूब-खूब पसन्द थी
जिसकी दोनो जेबो में
रखी जा सकती थी दो चिडिया
या दो सफेद चुहिया !

तोड लिए मैंने उसकी पसन्द के फूल
बिना पूछे पौधों से, और
गुच्छे बना लिए !

सनकी थी वह, सनक की हद तक
पसन्द था उसे समुद्र
अगर कोई न टोके तो
घटो, दिनों या शताब्दियो तक
देखती रह सकती थी वह
लहरो का आना-जाना

पोलीथिन की विशाल थैली मे
मैंने समुद्र को भर लिया
आप अंदाजा भी नही कर सकते
कि कैसी तकलीफदेह बात थी, यह
समुद्र के लिए

साथ तो वह हो लिया
पर आशंका तो लगातार बजती रही उसके दिमाग मे
कि रात बिरात इधर से कोई गुजरा
और नदारद पाया समुद्र को

तो बिना बात का बतंगड़ बन जाएगा

तट के पास से ही मछुआरों से
मैंने एक नाव मांग ली और
बाँध लिया उसे अपने दाहिने कंधे पर
उसका पाल जब हवा में लहराता, तो
लगता जैसे ताजे कोरे कागजों पर कोई
महाकाव्य लिख रहा हो !

चाँद मैंने कमीज की एक जेब मे रख लिया
दूसरी जेब मे क्योंकि सिगरेटें थी
इसलिए तारे, वो प्यारे-प्यारे
ढेर सारे सितारे, पेंट की जेबों मे भर लिए

तारे ! वो गिनती गिनने के खिलौने !
कई बार शुरु किया जिन्हें गिनना
और पूरा-पूरा कभी नही गिना !

तारे तो तारे थे, मूमफली नही
कि खाता चला जाता
छील-छील कर
खाली भी नही थे मेरे हाथ
फूलो से भरे थे, फूलों से
मेरे हाथ न हो, जैसे हों फूलों से लदे दो वृक्ष !

आखिरी दिन थे महीने के
चिल्लर की तलाश में हाय
जेबों में जब कोलम्बस हो जाते हैं
सो ऐसी ही फोकट की चीजों से भरी जा सकती थी
जेबें !

यह रात तीन बजकर दस मिनट का वक्त था, सड़क एकदम सुनसान
थी, और मैं उसके स्वप्न में जाने के लिए निकल पड़ा। मैं
इतनी सारी चीजों से लदा था, पर लुट जाने के खतरे का खयाल
मुझे एक बार भी नही आया, जबकि शहर में राहजनी की घटनाएँ
आये दिन हो रही थी। और तो और मुझे सड़क के कुत्तों और
गश्ती सिपाहियों का भी खयाल नही आया, रात में घूमने निकलते
हुए जिनकी वजह से बिना भूले जेब मे सिनेमा का
आधा फटा टिकट रखे रहना पड़ता था।
मैं किसी वृक्ष की तरह अपने हरे-भरे प्रेम में चार हाथ ऊपर तक
डूबा हुआ, आवारा हवा की तरह पूरी मस्ती मे था।

कपड़े के जूते पहने, चीजों से लदे-फँदे मैं बिना कोई आवाज किए
उसकी नीद मे पहुँचा, जूते मैंने बाहर नही उतारे, उसकी
नीद के दरवाजे पर ऐसी कोई तख्ती नही थी। उसकी आँखों
मे दूर तक फैली नीद, मेरे पहुँचने से पहले तक
एकदम स्वप्नविहीन थी।
कैलेण्डर के तारीखहीन हिस्सों-सी उस एकदम खाली नीद में
वह खुश थी न उदास। वह 'स्थिर जीवन' के चित्रों-सी नीद,
एक स्वप्न की प्रतीक्षा सी थी, आकर्षक पर मौन
और आँखें और बाँहें खोले हुए।

मैंने जल नही हिलाया, लहर नहीं बनाई
हवा को नही कोंचा, पेड़ को नही झिंझोड़ा
कि मछलियाँ भागती या जागती
चिड़िया

मैंने सिर्फ इतना किया कि हाथ मे
थामे फूलों को धीरे-धीरे फैला दिया
उसकी नीद मे
धीरे-धीरे
गंध और आश्चर्य से भरने लगी वह
धीरे-धीरे
नीद मे जागते हुए

देखा उसने गंध को
फूलों को, मेरी कमीज के हरे रंग को और
मुझे
नींद मे देखते हुए वह मुस्कुराई, उठी
और हवाई स्पंज चप्पल पहन कर
हवा पर सवार हो गई

मैंने एक बड़े से बादल को पकड़ा
और एक-एक कर तमाम चीजें
उस पर सजा दी

लेकिन समुद्र को मैं कहां रखता ?

थैली को उलट देता
तो सोती हुई सारी दुनिया
भीग जाती !

नही खोली मैंने थैली
नाव मे बैठ कर हम
थैली मे ही उतर गए

बाहर बादल पर, पेपर वेट सा
रखा था चांद और
उसके खरगोश
बादल के किनारे कुतर रहे थे
या बादल पर उगी दूब !

हम एक दूसरे के चुम्बनों से
ढंकते चले गये, ओंठ, आंखें
यहां तक कि सारा शरीर
ढंकता चला गया चुम्बनों से

OO

बादल इस बीच उड़कर जाने कहां चला गया
जाने कहां चली गयी सारी चीजें

हाय ! स्वर्ग में भी चोरी !
ऐसा तो पहले कभी नहीं सुना !

लौटा तो बस धूप का एक टुकड़ा था
जो घड़ी की तरह चमका रहा था
झटपट तैयार हो जाओ वर्ना
ऑफिस का वक्त बजा दूंगा !

तितलियाँ

हरी घास पर खरगोश
खरगोश की आँख में नींद
नींद मे स्वप्न
चाँद का

चाँद मे क्या ?

चाँद मे चरखा
चरखे मे पोनी
पोनी मे कतती
चाँदनी

चाँदनी मे क्या ?

चाँदनी मे पेड़
पेड़ पर चिड़िय
चिड़ियो की चोंच में
संदेसा ऋतु का

ऋतु मे क्या ?

ऋतु मे फूल
फूल पर तितलियाँ

हरी पीली लाल बैंजनी
रंगबिरंगी तितलियाँ
तितलियाँ
जैसे स्वप्न पंखदार
जैसे बहुरंगी आग के टुकड़े

उड़ते हुए

तितलियाँ
आती हैं घरो मे
विना आवाज, बेखटके
जवान होती लड़की के बदन पर
बैठती हैं
उड़ जाती हैं

कि 'छू लिया'
प्रेम होगा अब तुझे किसी से

तितलियाँ ही तितलियाँ
तितलियो पर आँखें
लड़की की

लड़की की आँखो मे क्या ?

तितलियाँ !!

करमकल्ले और सारस और बच्चा

क्या वे छोटी-छोटी हरी पृथ्वियाँ हैं
बादलों के ऊपर से दिखते घास के मैदान
जिन्हें किसी जादूगर ने
गेंदों मे बदल दिया है
या हरी पोशाक मे
किसी स्कूल के गोल-मटोल
बच्चे हैं वे

वे जादूगर हैं शायद
जो हमारे छुटपन की
छोटी पाठशालाओं मे आते थे
और एक रुमाल से
एक दर्जन रुमाल बनाने का
करतब दिखाते थे

पत्तों मे से पत्ते खोलते
अनेक चौड़े चपाट पत्तो में
बदल जाते हैं वे
जैसे किसी पेड़ ने बन्द कर लिया हो
अपने को समूचा
अपने अन्दर

हरी-हरी गेंदों के ढेर की तरह
रखे हैं करमकल्ले
एक बच्चा खड़ा है बगल मे
उन पर पानी छींटता
पानी पड़ते ही खिलखिलाहट में
बदल जाती है उनकी मुस्कुराहट

वे हँसते हैं
हर भुलभुने खनखनाते हैं
चारों ओर

किस करमकल्ले से निकला है यह बच्चा ?

क्या अभी खुलेंगे सारे करमकल्ले
और बाहर निकल आयेंगे
खूब सारे बच्चे
उछलते-कूदते ?

याद आती है एक रूसी कहानी
वैज्ञानिक शिक्षा देने को इच्छुक
दशोपज मे पड़े पिता से
कहता है बच्चा

"बच्चे करमकल्ले से निकलते हैं
या कोई सारस लेकर आती है
उन्हे आकाश से"

कुतूहल से भर जाता हूँ मैं
कि खुलने ही वाले हैं
करमकल्ले
कि धूप सारस की तरह
खड़ी है उनके बगल मे

देखता ही रह जाता हूँ एकटक
सामने के मकान की खिड़की पर
बैठी औरत
एक छोटा मोजा बुनने मे
मगन है

क्या उसे खबर है
कब खुलेंगे करमकल्ले ! !

माँ की याद

अचानक आती है
माँ की याद
और उदास हो जाती है
वह।
कि एक उसी का घर
नहीं देखा माँ ने
कि माँ क्यों चली गयी
उसका घर
बनने से पहले ही

सिसकने लगती है वह
तकिए मे सर गडाए
कि माँ नहीं खिला पायेगी
उसी के पहले बच्चे को

जबकि सारी बहनों के बच्चो को
गोदी में ले-ले कर
कितना नही खिलाया माँ ने !

उसे रह-रह कर याद आती है
माँ
इन दिनो
इन दिनो
जब वह खुद
माँ बनने वाली है।

शहद जब पकेगा

लम्बी उँगलियो वाली धूप है तुम्हारा प्यार
तुम छुट्टी ले लो कुछ दिन
और धूप से बोलो
एवज मे ऑफिस हो आये
टाइपरायटर पर बैठ जाये कुछ दिन

कमरे मे चहकती चिडिया है तुम्हारा प्यार
तुम छुट्टी ले लो कुछ दिन
और चिडिया मे बोलो
एवज मे ऑफिस चली जाए
रजिस्टर मे दर्ज कर आए
चिट्ठी पत्री

संतरे का पेड है तुम्हारा प्यार
बोलो उससे कुछ दिन
कर आए मेरी एवज मे
मेरे ऑफिस का काम
अभी तो दूर है संतरो का मौसम

कई दिन हैं अभी पगार मिलने में
और ठीक-ठाक करना है सारा घर
जुटाना है काम की कितनी सारी
छोटी-मोटी चीजें
एक पगार मे थोड़े न जुट जाएगा
सारा सामान

शहद का छत्ता है तुम्हारा प्यार
हल्की-हल्की आँच के धुएँ मे
जिमे पकाएँगे हम

तुम छुट्टी ले लो कुछ दिन
और साथ-साथ बाजार कर लो
मधुमक्खियों से बोलो
निपटा लेंगी घर का कामकाज
और शहद भी पक जाएगा तब तक

OO

बजाज तो क्या देगा उधार !
पर हो सकता है एक काम
अपन कपास के पेड़ को ही पटा लें
उसकी धौंस डपट से चल जाएगा काम
सीधे मिल से ही मिल जाएगा कपड़ा

अपन सिलाएँगे एक-एक नया जोड़ा
और नये जोड़े पहन कर इतराएँगे
कौन रोज-रोज आता है
यह दिन !

दर्जी तो पटेगा क्या !
उधार करे जिस तिस से
तो चल गया धन्धा
चल गया घर !
सुई से करेंगे बातचीत
और तागे को बता देंगे जेब

सेमल का एक पेड़ है मेरा दोस्त
अभी नहीं आया, तो कब आएगा काम ?
बोलेंगे उससे
भर दे एक तकिया
एक गद्दा, एक रजाई

अभी दूर हैं वे दिन
जब जरूरत होगी हमें
अलग-अलग रजाई की

जब पृथ्वी हो जाएगा तुम्हारा पेट
जब आकाश के कान में फुसफुसाएगी पृथ्वी
जब वृक्ष से आँख चुरा, चुराओगी तुम
मिट्टी

जब पहाड़ों की आड़ से
एक टुकड़ा आकाश चुरा लाओगी
तुम

अभी दिन हैं, अभी तारे गिनना हैं कई सारे

अनन्त तक फैली, बादलों को छूती
हरी-हरी घास है तुम्हारा प्यार
तुम छुट्टी ले लो कुछ दिन
और चलो घास में लुक-छिप जाएँ
अपन !

वे तीन

पहला बिजली का सामान बनाने वाले कारखाने मे
रात की पाली मे काम करता था

रात को अच्छी तरह तह करके लपेट कर
बंद करके चांद तारो को पेटी में
वह अलसुबह लौटता और
कमरे मे आकर सो जाता

सोने से पहले वह
दूसरे को जगा देता

दूसरा स्टोव पर चाय का पानी चढ़ा कर
आकाश के दरवाजे खटखटाता
कि धूप
धरती, पेडो और घरो तक आ जाए
चिड़ियें जागें और चीजें थोडी गर्मा जाएँ

फिर अपनी साइकल उठाकर वह निकल जाता
कि सुबह सब जगह पहुँची या नहीं !

ओसारे मे होकर धूप
जब लोगो की आँखो तक पहुँचती
वह सारे अखबार लगा चुका होता
जब वह अपने हिस्से का अखबार लिए लौटता
तीसरा जाग चुका होता
वे तीन थे
भाई नही दोस्त
जो शहर के एक छोटे से कमरे मे अँट गए थे

लेकिन वे तीनों कुंआरे थे
और उनके सपने इस कमरे मे
अँट नही पाते थे
कमरा छोटा था
और शहर बहुत बडा था
इसलिए कमरा जुटाने की जगह
उनकी जेबो मे नही थी

तीसरा दिनभर सडकें नापता
नौकरी की अर्जियाँ लिखता
ऑफिसो के चक्कर लगाता

दिखता एकदम फक्कड़
पर अन्दर ही अन्दर
उदास रहता

पहला अक्सर लौटते हुए
एक सितारा चुरा लाता
और बची हुई दो बीडियो के साथ
खूँटी पर टँगी तीसरे की कमीज की
जेब मे रख देता
चुपचाप

दूसरा अखबार से नौकरी के
विज्ञापन काट कर कतरनें
और थोड़ी सी धूप
और चालू चाय जितने पैसे
तीसरे के पैंट की जेब में
खिसका देता

तीसरा जानता था पर चुप रहता था
वह चाहता था एक छोटी सी नौकरी
एक छोटी सी नौकरी
जिसमें बचा रहे दूसरो के लिए

अपनापन

वे तीनों
रात का खाना एक साथ
एक छोटे से ढाबे मे खाते थे।

दादा ख़ैरियत

दादा ख़ैरियत
दादा ख़ैरियत

आवाज कसता है
जब कोई दादा ख़ैरियत
दर्जन भर गालियाँ बकते हैं
दादा ख़ैरियत
ज्यादा ही तंग करे कोई
तो झुँझलाकर पत्थर लेकर
दौड़ते हैं
दादा ख़ैरियत

ईद के ईद कोई दे देता है उन्हें
उतरन की शेरवानी धुलवाकर
कोई सिलवा देता है सस्ते लट्ठे का
खुसना
कोई दे देता है पुरानी-धुरानी
अलीगढ़ी टोपी
उसी को साल भर
बिना बदले
पहनते रहते हैं
दादा ख़ैरियत

पान की पीकों से भर चुकी है
पिछली ईद को पहनी शेरवानी
जगह-जगह से फट चुका है
गंदा खुसना
चीकट हो चुकी है टोपी
इसके बाद भी कोई कहे

दादा खैरियत
तो क्यों न गालियाँ बकें
दादा खैरियत !

दादा खैरियत का भी कोई
और नाम रहा होगा पहले
पहले जब कोई पूछता होगा
दादा खैरियत ?
तो जवाब में वो भी कहते होंगे
खैरियत मियाँ खैरियत
खुदा की मेहरबानी है
अल्लाह का फज़ल है

खैरियत जैसा लफ्ज़ सुनते ही भड़क जाते हैं
अब दादा खैरियत
एक चिढ़ाउनी बन गयी है उनकी
दादा खैरियत

जब गुजरते हैं बूढ़े दादा खैरियत
जुमेराती दरवाज़े के नीचे से
सर झुका कर गुजरते हैं
डर लगा रहता है हमेशा
कि टकरा न जाए दरवाज़ा
उनके सर से
दरवाज़ा जबकि ऊँचा
तिगुना या चौगुना उनके कद से

कैसा गुरूर अपने कद का दादा खैरियत को
कि खत्म हो चुकी नवाबी रियासत का
बचा हुआ यह आखरी दरवाज़ा
छोटा पड़ता है उन्हें
तन कर निकलने के लिए आज भी

देखो देखो नवाब भोपाल

क़ुदसिया बेगम, शाहजहाँ बेगम, बेगम सुल्तान जहाँ
देखो कि कितने ओछे तुम्हारे विशाल दरवाज़े
कितने बौने तुम्हारे बड़े-बड़े महल
एक अध पगले बूढ़े के आगे

ख़त्म हो चुकी नवाबी, ख़त्म हो चुकी रियासत
ख़त्म हो चुके नवाब की दयानतदारी के क़िस्से
पाँच दरवाज़ों में बंद शहर फैल गया
इतना बाहर
कि शहर के बीचो-बीच
आ गए पाँचों दरवाज़े

एक के बाद एक तोड़े गए चार दरवाज़े
बचा रह गया सिर्फ़ एक दरवाज़ा
जुमेराती दरवाज़ा
जिसके नीचे से जब गुज़रते हैं
दादा ख़ैरियत
तो मोखों से सिर निकाल कर
गुटर गूँ करते चिल्लाते हैं कबूतर
दादा ख़ैरियत
दादा ख़ैरियत

आसपास इकट्ठे हो जाते हैं
मोहल्ले के लड़के
जिनके पास न खेलने का वक़्त
न खेलने को हाकी फुटबाल
देखते ही दौड़ पड़ते हैं लड़के
पीछे-पीछे चिल्लाते हुए
दादा ख़ैरियत
दादा ख़ैरियत
इधर-उधर दौड़ते-दौड़ते
हाँफ जाते हैं दादा ख़ैरियत
गालियाँ बकते-बकते
रुँध जाता है गला

उड़ने लगता है थूक मुँह से

फोकट का तमाशा
मनोरंजन सबका
दरवाजे से बाहर
चूने रामरज गेरू की दुकान लगानेवालियों
बसोढो मालियो मूमफली के ठेलेवालो
होटल के चाय लगाने वाले लडको
के लिए
बिना दाम का
मन बहलाव

जब ज्यादा तग करते हैं लडके
जब ज्यादा तंग आ जाते हैं
दादा खैरियत
तो आगे बढ़ कर कोई न कोई
भगा देता है लड़कों को
थमा देता है कोई ठेलेवाला
मुट्ठी भर मूमफलियाँ
या ईरानी होटल से कोई मँगा देता है
एक चालू चाय
दादा खैरियत के लिए

कहाँ बची है खैरियत
किसकी बची है खैरियत
चलन न हो कहने का
तो कौन कह सकता है
इस जमाने मे
खैरियत मियाँ खैरियत

कम से कम चिढ़ाने के बहाने
कह लेते हैं लोग खैरियत

चिढ़ाने से बाज नहीं आते लोग
गाली देने से बाज नहीं आते
दादा खैरियत ! !

चखरी

घर लौटते हुए एक बार फिर
दिनभर की कमाई
और सपनों को
मुन्ने ईरानी की चखरी पर लगाकर
जीतने की इच्छा मे
दोनों चीजें हार जाएगा
लल्ला कंजर !

गालियाँ बकता लल्ला कंजर
देर रात तक नही लौटेगा
घर
चला जाएगा कलारी

किलप कर चखरी को कोसेंगी
गालियाँ बकेंगी औरतें

घर भर की चकल्लसें अपने सीने में दबाए
चखरी और सट्टे मे खोजते
अपने सपनो को
रात देर तक पटियों पर बैठे लोग
फीचर खुलने का इतजार करेंगे
और अपनी किस्मत को कोसते
लौट जायेंगे !

आधी रात को एक दोस्त
छलांग लगा जाएगा
जिन्दगी से बाहर
जाने किस किस का कर्ज

अपने मन में लिए हुए
हरबार खाली खानों पर रुकती
घूमती रहेगी चखरी
किस्मत की चखरी
धोखे की चखरी

रात को चीरता हुआ
चिल्लाएगा लल्ला कंजर
'मारो चखरी को मारो'
चिल्लाएगा लल्ला कजर
और
किसी नाली मे लुढ़क जाएगा !

नक़ाबपोश

ठीक साढ़े दस बजे
बैंक मे दाख़िल होता है
एक नकाबपोश
जेब से निकालता है नोटो की गड्डियाँ
काउन्टर पर खड़े होकर भरता है
खाता खोलने का फार्म
सब सन्न ! सब खामोश ! !
जैसे कनपटी पर धरी हो कोई पिस्तौल !

दो लाख !
दो लाख का डिपाजिट !
डरा डरा मन ही मन खुश होता
शाखा प्रबंधक !
जमा योजना की महान उपलब्धि
आसमान फाड कर गिरती
अगली पदोन्नति ! !

अचानक ! अचानक !
फैलती है खबर चारों ओर
धर लिया गया
बैंक से निकलते ही पुलिस द्वारा
कर लिया गया गिरफ्तार
नक़ाबपोश ! !

कई दिन ! कई दिन !
सबकी बातचीत में सबके इर्द-गिर्द

मँडराती है नक़ाबपोश की परछाईं
कई दिन ! कई दिन !!
कई दिन बाद
फिर कई दिन बाद

जेल से आता है एक चेक
नकाबपोश का
एक चेक पन्द्रह हजार का

सिमट आते है सब आस-पास
शाखा प्रबंधक, लेखपाल, रोकड़िया
अधिकारी, लिपिक, संदेशवाहक
सिमट आते हैं सब
आसपास
घेर कर खड़े हैं सब
चेक को

सब घूरते हैं कोई अजूबा नही !
संभव नही निकल आना चेक से
नकाबपोश का
सबके सब उत्तेजित
सब के सब निश्चिन्त
इधर-उधर किसी कोने में
स्ट्रांगरूम के दरवाजे के पीछे
कही लुका तो नही
नक़ाबपोश !!

शक की नजर दौड़ती है इधर-उधर
कैसा भयभीत
-सारा माया बाजार
अपनी ही परछाईं से !!

सब घूरते हैं चेक
चेक के हस्ताक्षरो में हिलता है
नकाबपोश का फाउन्टेन पेन !

गरुड़

पत्थर की मूर्ति के आगे
बैठा है चुपचाप
लम्बी पतली गरदन वाला
गरुड
पीतल के रंग का

हिलाओ
हवा मे बजती हैं घन्टियाँ
घनघनाता है उसका पेट

'धरम ने बाँध दिये
तुम्हारे भी पख
तुम्हारी भी उड़ान ! !

उड़ता नही
गरुड़
सिर्फ
टुनटुनाता है ।

मकर संक्रान्ति

पाला बदलती है
जब धूप
घर मे आती है
एक मिट्टी की गाड़ी

मिट्टी पर दौडते हैं
मिट्टी के पहिये
गडऽड गड़ऽड
हँसती है मिट्टी

मिट्टी की हसी से
भर जाता है
घर भर।

यह धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आँगन मे टहल रहा है, देख रहा है
दाहिनी ओर की दीवार पर
भीत फोड़ कर
एक पीपल उग आया है
दीवार मे दूर तक
पड़ गयी है दरार

पर पीपल को
न तो उखाड़ा जा सकता है
न काटा जा सकता है
क्योकि यह
धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आँगन मे टहल रहा है, देख रहा है
पीपल और बड़ा हो गया है
पूजा के लिए उसके आसपास
इकट्ठे होने लगे हैं
मोहल्ले के लोग

मकान एक सार्वजनिक स्थल
बनता जा रहा है
पर वह किसी को भी रोक
नहीं पा रहा है
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आंगन में टहल रहा है, देख रहा है
पीपल ने जड़ें और फैला ली हैं
दीवार धसक गयी है पूरी तरह
घर एक तरफ से
पूरा नंगा हो गया है
जहां से ताक झांक कर रहे हैं लोग
पर वह किसी से
कुछ नहीं कह पा रहा है
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आंगन मे टहल रहा है, देख रहा है
फैलती ही जा रही हैं
पीपल की जड़ें
और धसकता जा रहा है मकान

अपनी ही ज़मीन से
निर्वासित होता जा रहा है वह
वह मन-ही-मन बडबड़ा रहा है
ऐसी की तैसी इस...
पर असंभव है इसके आगे कुछ कहना
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है ।

ताला

एक बहुत मजबूत ताले के सामने
खड़ा-खड़ा सीटी बजाता है
चोर
मुस्कराता है ताला
मन ही मन
अपने तिलिस्म को
अपने मे लुकाता हुआ

खुराफात दोनो के भीतर
दोनों में चलती है
होड़
मुतमइन नये कारखाने का मालिक

असफल हो जाए अगर चोर
बंटाढार हो जाए
कितने बड़े तामझाम का ! !

कलाओं का अन्तर्संम्बंध

शासकीय संस्कृति की छुकछुक गाड़ी मे
दूसरे दर्जे की बोगी में
बैठेंगे शब्द
शब्द बैठेंगे दूसरे दर्जे की बोगी मे
संस्कृति की छुकछुक गाडी मे

पहले दर्जे की बोगी मे बैठेगा कौन,
पहले दर्जे की बोगी मे ?
पहले दर्जे मे बैठेंगे गायक
पहले दर्जे मे बैठेंगे वादक
पहले दर्जे मे बैठेंगे चित्रकार

अधिकारी, मंत्री, मुख्यमंत्री
और महान नृत्यांगनाएँ
विराजेंगी
वातानुकूलित शायिका में

संस्कृति की छुकछुक गाड़ी मे
दूसरे दर्जे की बोगी मे
बठेंगे शब्द !

जुड़ी रहेंगी सारी बोगियाँ
एक दूजे से
एक दूजे के साथ
कि हमारे समय मे यही तो है
कलाओं के बीच अन्तर्सम्बंध
आपसी सरोकार !
दोहराएगा बार-बार
शासकीय संस्कृति का प्रवक्ता

शब्द का
सम्मान करती है सरकार

सम्मानित की जायेंगी रूपंकर कलाएँ
गायकों को, वादकों को, चित्रकारों को
मिलेंगी भारी-भारी थैलियाँ
और शब्द
लौटेगा हाथों में लटकाए
फूलों का एक बड़ा हार
या
सिर्फ हार !

संस्कृति की इस छुकछुक गाडी में
हरदम दूसरे दर्जे का
नागरिक
बने रहने का
स्वीकार !!

महान कला-मूल्य

स्थापित होंगे
एक बार फिर स्थापित होंगे
कला की पावनता और
कला कला के लिए वाले
सारे मूल्य
महान कला-मूल्य !

एक अँधेरे कक्ष के धुधले उजाले मे
व्यस्त हैं नई-नई योजनाओं मे
कई योजना मार्तण्ड, लेखक, चित्रकार
कुख्यात गुप्तचर संस्था के वरिष्ठ अफसरान

पल प्रतिपल हो रहा है विस्फोट
महोत्सवों का
नए-नए उत्सवों का
आयोजित हो रही हैं कर्मशालाएँ
अनुवाद अनुवाद अनुवाद
धड़ल्ले से चल रहा है अनुवाद
और चारो ओर चक्कर काट रही है
फैलोशिप फोर्ड फाउंडेशन की

खटिया के आसपास चक्कर लगाती है छछूंदर
परीक्षा हाल में घूमता है
एक निरीक्षक
एक भेड़िया मंडराता है
कहवाघर की हर टेबिल के आसपास !
हर अंचल मे उठेगी अब आवाज़

देश !
कुछ नही होता देश
स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए हर अंचल को
बनना ही चाहिए उसे फिर से
छोटा सा मगर पृथक साम्राज्य

(ताकि बनाए जा सकें उसमे फौजी अडडे
लगाए जा सकें प्रक्षेपास्त्र !)

लगातार लगातार
आदिवासी कथाओ से खोजे जा रहे हैं
नए नाटकों के
        विद्रोही नायक !

अब वर्कशाप मे तैयार होगे नाटक
अब वर्कशाप मे लिखी जायेंगी कविताएँ
उपन्यास तैयार होंगे वर्कशापो मे
वर्कशाप मे तैयार की जाएंगी सारी कलाएँ
                निर्देशों के अनुसार
कि वर्कशाप संस्कृति का
नया दौर है यह

उपस्थित सारे यशःप्रार्थी लेखक
गायक वादक कलाकार चित्रकार
सबकी आत्मा मे गुदगुदी
सबके कानो मे फुसफुसा रहा है
                डालर
और देखिए
वो उड़ा वो उड़ा
हवाई जहाज पर होता सवार
फलाँ लेखक का दिमाग
        यूरोप की यात्रा पर ! !

सेब

क्या होता
न्यूटन की जगह अगर मैं होता
तो क्या होता उस सेब को देख कर ?

एक अद्भुद गोल
गोल और सुर्ख
आग की
मैं एक कविता लिखता

एक भूखा बच्चा होता
दौड़ कर आता
चिड़ियों और सांपों के
मुंह छुआने से पहले ही
उठा कर धन्ना कर
भाग जाता
किसी कोने में दुबक कर
जल्दी-जल्दी कचर-कचर खाता
सेब की सुन्दरता से बेखबर
भूख की तरह

हो सकता था
माली की लाठी से घायल हो जाता
या चोरी के इल्जाम मे पकड़ा जाता
पुलिस ले जाती टाँगाटोली करके

कनपटियां
झुनझुने सी बजने लगती
अगर कोई जवान लड़की

होती वहाँ
पर उस सबसे भी क्या होता
ज्यादा से ज्यादा
एक कविता लिखी जाती
एक भूख थोड़ी देर को
तुष्ट होती
कानून की कोई धारा
पुष्ट होती

या लड़की
प्रेम करने लगती
अपने पड़ोसी लड़के से

गुरुत्वाकर्षण का नियम
जाने बगैर...

अनार

मत जाओ दुखियारो
अनार के पेड़ की तरफ
मत जाओ !

सौ बीमारों के बीच
वह असहाय अकेला है

कंजूस !
अपनी गदी पोटली मे छुपाए
अपने सारे मोती
सारा खजाना !

माना परिंदे का पर देख कर
भाँप जाते हो तुम
सारी बात
पर कहो तो जरा
अनार के भीतर छुपा है
क्या कोई अस्पताल ?
या लुक कर बैठा है उसमें
कोई हकीम लुकमान ?

मत दौड़ो दुखियारो
अनार के पेड की तरफ
मत दौड़ो ।
कि हाँफते-काँपते जब तक
पहुँचोगे तुम
कोई राक्षस चुरा कर
ले जा चुका होगा

सारे अनार !
सवाल करो !
सवाल करो !
हमारे गाँव मे कब खोला जाएगा
अस्पताल
हमारे घरो के आसपास
कब लगाए जायेंगे
अनार ?

सवाल करो
पर ललचाओ मत
अनार को देख कर

कि सौ बीमारो के बीच
वह अकेला है ! !

असली किस्सा तबियत के हिरन हो जाने का

हिरन छाप बोतल का ढक्कन खोल कर
मैंने आज़ाद किया हिरन को
और खुला छोड दिया उसे
अपनी नसों के जन्तर-मन्तर मे
जिसके बीच ही कही था
मेरी आत्मा का कोमल-कोमल
और हरा-भरा चारागाह

पलक झपकते ही हिरन हो गई मेरी तबियत !

सृष्टि के छोरों तक मेरे सामने फैले हुए थे सातो आसमान
और हवाओ को चीरता सातवें आसमान पर
कुलांचें भर रहा था हिरन
और हिरन की तबियत में
बा हैसियत एक शहशाह
बैठा हुआ था मैं

हाथ बांधे खड़े थे सारे नक्षत्र, ग्रह और उपग्रह
सात दिन खड़े थे सात दिनो की आभा
और चारो मौसमों के सात हजार फूलों और फलो से
भरी डलियाँ लिए
ऋचाएँ गा रहे थे सप्तऋषि तारे
बिछा हुआ था चांदनी का चकमक गलीचा
पूरे आकाश मार्ग पर
और चाँद अपनी सुनहरी बाहें फैलाए
खड़ा था मेरे स्वागत के लिए

यह मेरी विराट और बन्जर
बेरोजगारी के दिनों की एक रात थी
ये वे मनहूस दिन थे जब
सुबह साढ़े दस से शाम साढ़े पांच तक
सारा-सारा दिन किचकिचाती धूप में
चालू चाय और बीड़ियों के सहारे
विद्यालय और सरकारी कार्यालयों से
अखबार के दफ्तरों तक
फकत एक छोटी सी नौकरी की तलाश में
मैं नापता रहता था
अजगर सी लम्बी सड़कें

यूँ बड़ी बात नहीं थी
सुई के छेद से हाथी का निकल जाना
या जरा सा पेट तमा कर चुरा लेना पूरा ऊँट
पानी पर नंगे पांव चल कर समुद्र पार करने का दावा
करने वाले बाबाओं के इस महान देश में
एक छोटी सी नौकरी तलाश लेने को छोड़ कर
आसान था
बड़े से बड़ा जंगी करतब !!

हाय हाय ! एक छोटी सी नौकरी
दो कौड़ी की बबुआगिरी
या चार पैसे की मास्टरी
जिसकी कोई इज्जत आबरू नहीं इस दुनिया जहान में
सबसे सस्ता भाव, सबसे अन्तिम प्राथमिकता जिसकी
शादी-ब्याह के व्यापार में

किसी तिल की अंटी में नहीं था
मेरी खोपड़ी के लायक थोड़ा सा तेल

रात के इस शानदार दूसरे पहर में
जब कुत्ते किसी बंगले में पालतू होने के

ख्वाबों मे डूबे हुए थे
और चमगादड़ें कर रही थी रतजगा
मैं सारी दुनिया के रोज़गार कार्यालयो के
मंसूबों पर खाक डालता
और जब-तब दयार्द्र हो उठने को आतुर लोगों की
खोपडियों में खलबली पैदा करता
हिरन की तबियत में सवार
मैं उड़ रहा था सातवें आसमान पर

ब्रह्माण्ड की टेबिल पर
चाँदी की चमचमाती तलवार की तरह
रखी थी आकाशगंगा

यह थी मेरी तलवार !
दुनिया के महानतम योद्धा की तलवार
से भी बड़ी और शानदार
जिसे धारण करके निकल जाना था मुझे
दिग्विजय पर
दुनिया के तमाम दुखों का सर काटते
और खनखनाते हुए दिशाओं को

ठीक इसी वक़्त लेकिन मुझे दिखा शनिग्रह
वह नाना फड़नवीस सी टेढी पगड़ी बांधे
लुकता-छिपता मेरी नज़रो से बच कर
निकल भागने की कोशिश कर रहा था
चुपचाप

"गलियाँ और नुक्कड़ नहीं हैं
इस सपाट आकाश मार्ग में
बच कर कहाँ जाएगा तू ?"
धर दबोचा मैंने उसे और मज़े से खबर ली उसकी
"तो आप ही हैं वे शनिदेव
जो खड़ी करते रहते हैं
रोज-रोज नई चकल्लसें

और पड़े रहते हैं हमारी धरती के
हर किसी मुसीबतजदा आदमी के पीछे,
क्या आपको खबर है
कि आपका खौफ दिखा कर
जब-तब अपनी अन्टियाँ गरमाते रहते हैं
हमारे यहाँ के धूर्त ज्योतिषी और पण्डित !
ठीक-ठीक बताओ
इस माल मे कितना हिस्सा है तुम्हारा ?"

खिसियाता हुआ चुपचाप खड़ा था
वह नज़रें झुकाए
चलते-चलते मैंने डाँट कर कहा

"रावण की जूतियाँ चटकाने वाले पलीत
बाज आओ अपनी हरकतो से
वरना धूल मे लोटती नजर आएगी
तुम्हारी पगड़ी"

फ़ुरसत ही कहाँ थी मेरे पास कि मैं सुनता
घिघियाते हुए वह क्या कह रहा है
अपनी सफाई मे
हिरन की पदचाप सुनते ही वहाँ
खड़े हो गए थे सबके कान
अपनी-अपनी गद्दियाँ छोड़कर
खड़े थे वहाँ सारे ग्रह
सकुचाए हुए खौफ खाए हुए
कि पता नही किस पर टूट पड़े मेरा कहर
किस की शामत आ जाए दूसरे ही पल !

नौकरी नही करते हिरन
उसे नही थी जरूरत किसी चरित्र प्रमाण-पत्र की
नस-नस मे थी उत्तेजना और हवा हो रहे थे
उसके पैर

एक विशाल फुटबाल सी नजर आ रही थी पृथ्वी
ओर-छोर फैला था एक हरा जादू
हरी चादर ओढ़ कर
मजे मे सोए पड़े थे
गेहूँ और धान
बाग की रखवाली मे ऊँघते राक्षसों की तरह
उकड़ू बैठे थे
विन्ध्याचल और सतपुड़ा के भीमकाय पहाड़
"सारे सोने के अनार चुरा कर ले जाऊँगा मैं
और तुम्हारी तो औकात क्या
तुम्हारे बचे-खुचे राजा और राजकुमार भी
बाल तक बाँका नही कर पाएँगे मेरा!"

आसमान की सातवी मजिल से चिल्ला कर कहा मैंने

मूर्खों की तरह मुँह उठाए
खड़े थे सारे वृक्ष
मेरी बातों को बूझने की कोशिश करते

शताब्दियों बासी खदबदाती शिक्षा की फफूंद
बजबजा रहे थे देश के सारे शिक्षा केन्द्र
विद्यालय महाविद्यालय और विश्वविद्यालय
और
स्याही की चिड़ियो की बीट
और कागजी घोड़ों की लीद पर
उगे हुए थे
सचिवालय और सरकारी कार्यालयों के
कुकुरमुत्ते
उनके सम्मान में एक दर्जन गालियाँ
निकालते हुए
मैं चीखा
"तुम! तुम माल्थस की लीद में
अपनी अकर्मण्यता छुपाने वाले
शासकों और प्रशासकों को

ढोने वाले खच्चरो
तुम दोगे इस देश को
नई योजनाएँ और खुशहाली . .
तुम !
जो नही तलाश सकते इस विशाल भूखण्ड पर--
एक स्नातक के लिए
एक छोटी सी नौकरी ! "
नही है नही है
चाँद पर अगूर का एक भी बगीचा नही है
हजारों टाँगें हवा मे उछालते
और चाँद की ओर लपकते
समुद्र के सामने
खोल दिया भण्डाफोड कर दिया
मैंने इस रहस्य का !!

नीचे खनखना रहा था
सारा सर्राफा सटोरियो की आवाज से
चमचमा रहे थे निजि व्यवसाय में लगे
चिकित्सको के चेहरे
कि चाँदी के दलदल से उड़ते हुए
सारे देश मे फैल रहे हैं
दिमागी बुखार के कीटाणु
हाय ! चाँदी के एनाफलीज
सोने के वायरस
हीरे जवाहरात के बेक्टिरिया !!

रात के इस पहर मे
जब सोना चाह रहे थे या सो चुके थे लोग
चौकीदार चिल्ला रहे थे
जागते रहो जागते रहो
नीद के झोंको मे लिख रहे थे अखबारनवीस
राजनेताओ के उबाऊ और मूर्खता से भरे भाषणो को
अपनी चटपटी भाषा मे

चंद्र लोक, सर्राफा और वेश्याओं के कोठों के सिवा
एकदम सुनसान पड़े थे
सारे दफ्तर, बैंक और शिक्षा केन्द्र
आदमी तो आदमी
आदमी की गंध तक नही थी वहाँ
उन सैंकड़ों कमरो और गलियारों में
पोले बाँसों के भीतर से गुजर रही थी हवा
और पोस्तो में बज रहा था खसखस
बंदूकें बगल मे टिकाए
स्टूलों पर ऊँघ रहे थे चौकीदार
अपने कवचो मे घोंघों की तरह
दुबके बैठे थे टाइपराइटर
और इस्पात के तहखानो मे सोई पडी थी फाइलें
फाइलों मे सो रही थी योजनाएँ
सैंकडो का सुख चैन और भविष्य ! !

"अपनी ख्वाबगाहों मे घोड़े बेच कर सोते हुए
प्राचार्यो, प्रशासको और शासको सुनो !
सुनो ! कि मैं
तुम्हारे नरक के ऊपर से बोल रहा हूँ
है तुम्हारे सम्पूर्ण इतिहास मे ऐसा कोई शहंशाह
जिसने सवारी की हो हिरन की तबियत मे बैठ कर

चौपट खुले छोड दिए हो जिसने
अपने खिड़की दरवाजे
जिसे कोई खौफ कोई खटका न रहा हो
चोर डाकू और गिरहकटो का
इस तरह बेखबर रहा हो जो
अपनी दौलत और जागीर से ?

नही हुआ
नही हुआ
इतिहास मे मुझसे पहले ऐसा कोई शहंशाह नही हुआ

क्या छीन सकता था कोई मुझसे !
मेरी जेब में फकत कंगाली का एक जिन्न था
जिसके पास एक विराट खजाना था
तंगहाली से भरे दिनों का

वह बोतल जिससे
आजाद किया था मैंने हिरन को
लौटा चुका था मैं
कलारी के मुच्छड़ मालिक को
और वसूल चुका था अठन्नी
और अब
वह रकम भी नहीं थी मेरे पास
उस एकमात्र रकम से खरीदा जा चुका था
काला फूल
बीड़ियों का !

"ओ धुएँ का धन्धा करने वाले बीड़ी सेठो
लखपतियो, करोड़पतियो, अरबपतियो
याद रखना
यह मेरा आठ आने का अहसान !
याद रखना कि मैंने अपने सबसे तंग दिनों में भी
दिए थे तुम्हें आठ आने
याद रखना, अपनी जेब की सम्पूर्ण दौलत
लुटा दी मैंने तुम जैसे दौलत के पिस्सुओं पर !"

मुझे पता था, सब पता था मुझे
कि कमरों में घुसे हुए कई हाथ
लाल स्याही का पेन थामे
मेरे नाम के आगे लगा रहे हैं
संदेह के निशान
लेकिन उस वक्त कौन कर सकता था फिक्र
इन बेहूदा बातों की !!

सुनो ! इस महान धरती की तमाम
देवियो और सज्जनो सुनो !

मैं चश्मदीद गवाह इस सातवें आसमान का
बताता हूँ तुम्हें
कोई स्वर्ग, कोई बहिश्त नही है यहाँ
चकनाचूर हो जाएँगे तुम्हारे सैकड़ों ख्वाब
मैं जानता हूँ
लेकिन सुनो ! एकदम सच-सच बताता हूँ तुम्हे
खुदा को किसी भी नाम से पुकारने वालो
यहाँ नही है किसी भी खुदा का वजूद
और कभी रहा हो
तो भाग चुका है वह
मेरे यहाँ पहुँचने से पहले ही

मैंने सुलगायी तमाम बीड़ियाँ एक साथ
और बाँट दी उन तमाम लोगो को
जो शहंशाह थे मेरी ही तरह
कंगले शहंशाह !!
अपनी-अपनी तबियत की जागीर मे
दण्ड पेलते हुए !

धुएँ ही धुएँ से भर गया सारा स्वर्ग
सात मंजिला स्वर्ग !!
चमक उठी बीड़ियाँ
चमक उठी जैसे सैकड़ों मशालें !
मशालें ही मशालें
चीख रही थी चारो ओर
गुंजाते हुए पूरे ब्रह्माण्ड को
गूँज रहे थे सैकड़ों कंठ

बदलो ! बदलो !
बदलो इस संसार को !!

मैंने खटखटाए तमाम सितारों के दरवाज़े
और हुक्म दिया उन्हें
कि कल आना
हाजिर होना कल
हमारे दरबार मे

कल लिखाऊँगा मैं तुम्हें
नई दुनिया की संरचना का
नया ड्राफ्ट !!

भोपाल : शोकगीत 1984

कुछ दिनों बाद

कुछ दिनों बाद वहाँ घास उग आयेगी
कुछ दिनों बाद मिट्टी कड़ी हो जायेगी वहाँ
नमक और फास्फोरस की मात्रा बढ़ जायेगी
जहाँ दफनाए गए थे
दो दिसम्बर की रात मारे गए लोग।

दुख पर धीरे-धीरे धूल की कई तहें
जम जायेंगी और यादों पर
कई और दुखों की

कुछ दिनों बाद लोग घटना पर बात करने से
बचेंगे एक दूसरे से और सोचेंगे
कि याददाश्त कमजोर होती है लोगों की

कुछ दिनों बाद बिना पहचान वाले
मृतकों का पोस्टर
कहीं नहीं दिखेगा शहर में।

कोई नहीं रोता

अब यहाँ कोई नही रोता

लोग बहुत जल्दी थक जाते हैं और
बहुत जल्दी ऊब जाते हैं
एक शका रह-रह कर शहर का चक्कर काटती है
एक डर लोगो के साथ-साथ चलता है
परछाईं की तरह हरवक्त

हवा गुजरती है बच्चो की कब्र को छूती हुई
और एक खरखराता हुआ शब्द गूँजता है
रुँधे गले मे जैसे कोई बच्चा
आखिरी बार पुकार रहा हो
माँ

अब यहाँ कोई नही रोता

शहर के एक इलाके के सारे पेड
अब भी स्याह हैं
रात के अँधेरे में वे किसी शोक जुलूस की तरह
नजर आते हैं

औरतें कुछ भी याद न करने की कोशिश करती हुई
दिन भर लिफाफे बनाती हैं, किसी कतरन मे
बच्चे की तस्वीर देख कर ठिठक जाती हैं
आँखें चुराते हुए
कागज को जल्दी से पलट कर
ढेर में मिला देती हैं
अब यहाँ कोई नही रोता
सिर्फ झरी हुई पत्तियाँ रात में सरसराती हैं।

हवा

हवा को डस लिया है
किसी करात ने
या कौड़िया साँप ने

लहर मारता है जहर
थरथराता है रह-रह कर
हवा का बदन

भागो भागो भागो
जहाँ भी खुला हो
थोड़ा सा आकाश
जहाँ भी बची हो
थोड़ी सी हवा पवित्र
भागो भागो भागो
चीखता है
सारा शहर

हमारी हवा को डस लिया है
किसी करात ने
किसी कौड़िया साँप ने ।

वृक्षों का प्रार्थना गीत : एक

मत छुओ, हमें मत छुओ बसंत
अब नही हो सकता
छुपम-छुपैया का खेल

तुम छुओ और हम उड़ जायें
अन्तरिक्ष में
लुक जायें किसी नक्षत्र,किसी गृह,उपगृह
या तारे की आड़ मे

हमे डस लिया है एक विषैली रात ने
मत छुओ, हमे मत छुओ बसंत !

वृक्षों का प्रार्थना गीत : दो

मत छुओ, हमे मत छुओ बसंत
हो सके तो लकड़हारों को बुलाओ
जो काट डालें हमें
आग में झोंक दें

हमारे स्वप्न में अब कोई जगह नहीं
फलों और फूलों से लदे होने के
स्वप्न के लिए
अब हमारी रात में, हमारी नींद में
सिर्फ मृत्यु घूमती है नगे पाँव
दौड़ते भागते हाँफते
असमय मरते हैं बच्चे औरतें पुरुष
निरपराध !
कोई कब तक, कब तक देख सकता है
अनवरत मरते, दम तोड़ते हजारों लोगों को
हर रात !

मत छुओ, हमें मत छुओ बसंत
हो सके तो लकड़हारों को बुलाओ
जो काट डालें
आग में झोंक दें हमें
मुक्त कर दें हमे
इस भयावह स्वप्न से !

वृक्षों का प्रार्थना गीत : एक

मत छुओ, हमें मत छुओ बसंत
अब नही हो सकता
छुपम-छुपैया का खेल

तुम छुओ और हम उड़ जायें
अन्तरिक्ष में
लुक जायें किसी नक्षत्र,किसी गृह,उपगृह
या तारे की आड़ मे

हमें डस लिया है एक विषैली रात ने
मत छुओ, हमे मत छुओ बसंत !

वृक्षों का प्रार्थना गीत : दो

मत छुओ, हमें मत छुओ बसंत
हो सके तो लकड़हारों को बुलाओ
जो काट डालें हमें
आग मे झोंक दें

हमारे स्वप्न में अब कोई जगह नही
फलो और फूलों से लदे होने के
स्वप्न के लिए
अब हमारी रात मे, हमारी नींद में
सिर्फ मृत्यु घूमती है नगे पाँव
दौड़ते भागते हाँफते
असमय मरते हैं बच्चे औरतें पुरुष
निरपराध !
कोई कब तक, कब तक देख सकता है
अनवरत मरते, दम तोड़ते हजारों लोगों को
हर रात !

मत छुओ, हमे मत छुओ बसंत
हो सके तो लकड़हारों को बुलाओ
जो काट डालें
आग में झोंक दें हमें
मुक्त कर दें हमें
इस भयावह स्वप्न से !

इस शहर को छोड़कर

जो छोड कर गए थे
सब लौट आये, सब लौट आयेंगे एक दिन
इस शहर को छोड़ कर
अब कभी नही जा पायेंगे हम

जिस मिट्टी के नीचे दबी हों
अपनो की हड्डियाँ
कोई छोड़ कर जा भी कैसे सकता है
वह जगह !

इससे ज्यादा कोई बिगाड भी क्या सकता है
किसी शहर का
अब मृत्यु से कभी नही डर पायेंगे हम

अब चाहकर भी कभी इस शहर से
नफरत नही कर पायेंगे हम ।

मेरे शहर का नाम

मैं नहीं चाहता
कि जब भी लूं
मैं अपने शहर का नाम
दूसरा पूछे
क्या हुआ था उस रात ?
कैसे हुआ वह सब कुछ ?

मुझे आज तक कोई नहीं मिला
जिसने कहा हो
मैं हिरोशिमा से आया हूँ
मैं आया हूँ नागासाकी से

क्या मुंह लेकर जाऊं मैं
दूसरों के सामने
किस मुंह से कहूँ
कि मैं आया हूँ
किस शहर से !

बसंत 1985

इतना थका और लज्जित
किसी ने नही देखा होगा
बसत को
जरा सी आहट पर खड़े हो जाते है कान
और तपने लगती हैं लवें
कि कही कोई पूछ न बैठे
क्यों आये इधर

इतना सहमा और शंकित
किसी ने नही देखा होगा कभी
बसत को

कोई वृक्ष नही जहाँ
एक हरी कोपल की तरह फूट सके वह
कोई वृक्ष नही जिसे फूलो से लादकर
विस्मित कर डाले वह सबको !
और कोई नही जो
आँख भर देखे उसे
और आश्चर्य से भर जाये !

हो क्या गया है इस शहर को !

रेलवे प्लेटफॉर्म पर
बेचैनी से चहलकदमी करता सोचता है वह
कि किसी भी दिशा को जाने वाली
आये कोई भी गाड़ी
चढ़ कर चला जायेगा वह
किसी और शहर को

इस तरह आते और इस तरह लौटते
किसी ने नहीं देखा होगा
इससे पहले कभी
बसंत को।